पाठ्यचर्या के उद्देश्य

Aims of Curriculum

पाठ्यचर्या का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि समस्त शैक्षिक कार्यों के लिए कुछ निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है।

(क) बालकों का सर्वांगीण विकास।

(ख) नैतिक चरित्र का निर्माण।

(ग) मानसिक शक्तियों का विकास।

(घ) संस्कृति एवं सभ्यता का हस्तांतरण

(ङ) सृजनात्मक शक्तियों का विकास।

(च) शिक्षण स्वरूप का निर्धारण।

विद्यालय में पाठ्यचर्या की आवश्यकता

Need of Curriculum In School

शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को सफल बनाने के लिए पाठ्यक्रम की बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता मानी जाती है। इसके बिना शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

को सफल नहीं बनाया जा सकता है।
पाठ्यक्रम ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास होता है।
समय व परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम में भी विकास होना चाहिए ताकि विद्यार्थी पाठ्यक्रम के द्वारा केवल इतिहास का ही ज्ञान न प्राप्त करके उसके साथ वर्तमान तथा भविष्य की समस्याओं से भी अवगत हो। इससे वर्तमान तथा भविष्य की समस्याओं को दूर करने में सक्षम हो सकते है।

शैक्षिक प्रक्रियां के तीन पहलू होते है।

(1) शिक्षा क्यों (Why of Education)

(2). शिक्षा कैसे (How of Education)

(3) शिक्षा में क्या (What of Education)

पाठ्यक्रम औपचारिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है।
औपचारिक शिक्षा केवल विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि में ही सम्भव है। ऐसी शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण उस समय की आवश्यकता को व परिस्थितियों के आधार पर होता है।
एक निश्चित पाठ्यक्रम विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास नहीं कर सकता है।
इसलिए पाठ्यक्रम में समय व परिस्थितियों के अनुसार विकास व परिवर्तन करना चाहिए।

Appointments

पाठ्यक्रम की आवश्यकता व महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) सुव्यवस्थित शिक्षा की व्यवस्था - Well organized Education System -

पाठ्यक्रम द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित किया जा सकता है। इससे यह निश्चित करने में सुविधा रहती है कि शिक्षा के किस स्तर पर कौन सी विषय वस्तु पढ़ानी है, कौन सी क्रिया करनी है तथा कौन-2 से अनुभव प्रदान करने है। पाठ्यक्रम की सहायता से ही यह निश्चित करने में सुविधा रहती है कि छात्रों में विभिन्न स्तरों पर कौन-2 सी क्षमतायें, प्रवृत्तियाँ तथा रुचियों का विकास करना है।

(2), उद्देश्यों की प्राप्ति (Attainment of objectives)

समाज की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण तथा विकास किया जाता है। पाठ्यक्रम के अभाव में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति असंभव है तथा इसके अभाव में शिक्षण कार्य भी संभव नहीं हो पाता है।

Scanned with CamScanner

(3) ज्ञान प्राप्ति का साधन (Source of Acquiring Knowledge)

यह संसार ज्ञान के रहस्यों से भरा हुआ है मनुष्य हर समय इस ज्ञान और रहस्यों को जानने के लिए उत्सुक रहता है। लेकिन यह ज्ञान केवल पाठ्यक्रम के द्वारा ही जाना जा सकता है। पाठ्यक्रम का निर्माण ज्ञान प्राप्ति के आधार पर ही किया जाता है। ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य अपने अनुभवों में वृद्धि करता है। जिससे वह समाज में अच्छा जीवन व्यतीत कर सकता है।

(4) शिक्षण सामग्री का निर्धारण (Determination of Study material)

पाठ्यक्रम हमें बताता है कि हमें क्या पढ़ना है। इसकी मदद से ही शिक्षा के विभिन्न स्तरों तथा कक्षाओं के लिए पाठ्य सामग्री का निर्धारण करने में सहायता मिलती है पाठ्यक्रम हमें बताता है कि विभिन्न कक्षाओं में क्या पढ़ाया जाय। जहाँ सुस्पष्ट पाठ्यक्रम नहीं होता वहाँ पर निश्चित करना कठिन हो जाता है कि शिक्षक द्वारा क्या पढ़ाया जाय।

Scanned with CamScanner

(5) स्तर बनाये रखने में सहायक —
Helpful increasing the standard —

यदि पाठ्यक्रम सुनिश्चित रहता है तो उससे शिक्षक स्तर को बनाये रखने में सहायता मिलती है। पाठ्यक्रम ही बताता है कि क्या पढ़ना है। पाठ्यक्रम के आधार पर ही दो या अधिक शिक्षा प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन करना संभव हो पाता है।

(6) मूल्यांकन की प्रक्रिया में सहायक —
Helpful in Evaluation process —

पाठ्यक्रम के कारण ही मूल्यांकन प्रक्रिया सरल, सहज तथा वैज्ञानिक बनती है। निश्चित पाठ्यक्रम होने (पर ही) छात्रों की योग्यताओं तथा क्षमताओं का सही मूल्यांकन संभव हो पाता है। पाठ्यक्रम के अभाव में मूल्यांकन किया जायेगा तो इसमें वैधता तथा विश्वसनीयता का अभाव होगा।

(7) लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास
Development of democratic values.

वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। जहाँ पर सभी नागरिकों को एक समान समझा जाता है वही पूछती और उन्हें किसी भेद-भाव के बिना प्राप्त है। लोकतंत्र में सभी को समानता व स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है जिसके उसमें उदारता, न्याय, भ्रातृत्व, सामूहिक जीवन आदि

गुणों को पैदा किया जाता है। ये गुण छात्रों में लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास करने में सहायक माने जाते हैं।

(8) आवश्यकताओं की पूर्ति (Fulfilment of Needs)

विद्यालय में पढ़ने वाले सभी छात्रों की बहुत आवश्यकता होता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति वह पाठ्यक्रम के द्वारा ही करता है। बालक के साथ-साथ प्रत्येक राष्ट्र व समाज की भी अपनी आवश्यकताएं होती हैं। इन सबकी पूर्ति भी पाठ्यक्रम के द्वारा ही सम्भव है। प्रत्येक समाज व राष्ट्र चाहता है कि उसके नागरिकों में राष्ट्र प्रेम, अच्छी नागरिकता व राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की भावना पैदा हो। यह केवल पाठ्यक्रम द्वारा ही सम्भव हो सकता है। पाठ्यक्रम ही नागरिकों में ऐसे गुणों का विकास करने में सहायक हो सकता है। विद्यालय पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्र, समाज व बालक की आवश्यकताओं के आधार पर करके इन सबकी पूर्ति करता है।

(9) समय व शक्ति की बचत (Saving Time And Energy)

पाठ्यक्रम के कारण ही शिक्षक तथा छात्र अधिक से अधिक निरर्थक क्रियाओं से बच जाते हैं। वे अपनी क्रियाओं को पाठ्यक्रम की सीमाओं में ही सीमित रखते हैं। इससे समय व शक्ति की बचत होती है। पाठ्यक्रम के कारण ही अध्यापक यह सुनिश्चित कर पाता है कि उसे क्या व कब पढ़ाना है। पाठ्यक्रम के द्वारा ही उन्हें इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता है इससे छात्र एवं अध्यापक दोनों को ही फायदा मिलता है।

(10) विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान (To get knowledge of various subjects)

पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यक्रम के द्वारा ही हम विभिन्न विषयों जैसे - विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, राजनीतिशास्त्र व इतिहास आदि के बारे में विस्तारपूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों को एक दूसरे से जोड़कर छात्रों को उनके जीवन में प्रयोग करने के लिए तैयार करता है। ये विषय छात्रों के दैनिक जीवन को सुचारु रूप से चलाने की सिद्ध करते हैं।